

<p>J. Krishnamurti - On Learning (Life Ahead Introduction)</p>	<p>जे. कृष्णमूर्ति : सीखने की कला</p>
<p>It seems to me that a totally different kind of morality and conduct, and an action that springs from the understanding of the whole process of living, have become an urgent necessity, in our world of mounting crises and problems. We try to deal with these issues through political and organizational methods, through economic readjustment and various reforms; but none of these things will ever resolve the complex difficulties of human existence, though they may offer temporary relief. All reforms, however extensive and seemingly lasting, are in themselves merely productive of further confusion and further need of reformation. Without understanding the whole complex being of man, mere reformation will bring about only the confusing demand for further reforms. There is no end to reform; and there is no fundamental solution along these lines.</p>	<p>मुझे ऐसा लगता है कि निरंतर बढ़ रही विपदाओं एवं समस्याओं से घिरे इस संसार में एक पूर्णतया भिन्न प्रकार की नैतिकता, आचरण और कर्म की दरकार है। ऐसा कर्म-व्यवहार जो जीवन की समस्त प्रक्रिया की समझ पर आधारित हो हमारी एक तत्काल आवश्यकता बन गई है। हम अकसर इन समस्याओं का समाधान राजनैतिक एवं संगठनात्मक पद्धतियों, आर्थिक फेरबदल और कई तरह के सुधारों के ज़रिए करने की कोशिश करते हैं। इनमें से कोई भी तौर-तरीका मानव जीवन की जटिलताओं को सुलझाने में कामयाब नहीं हो सकता, यद्यपि उनसे कुछ समय के लिए राहत मिल सकती है। सभी सुधार, चाहे वे कितने ही व्यापक एवं टिकाऊ क्यों न प्रतीत हों, आगे चलकर उलझनों को बढ़ाते ही हैं और नए-नए सुधारों की ज़रूरत खड़ी होती ही रहती है। मनुष्य के संपूर्ण जटिल अस्तित्व को समझे बिना किया गया कोई भी सुधार आगे और अंतहीन सुधारों की गड़मड़ मांग पैदा करेगा। सुधार का कोई अंत नहीं है; और इससे कोई मौलिक समाधान भी होने वाला नहीं है।</p>
<p>Political, economic or social revolutions are not the answer either, for they have produced appalling tyrannies, or the mere transfer of power and authority into the hands of a different group. Such revolutions are not at any time the way out of our confusion and conflict.</p>	<p>राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक क्रांतियों में भी इसका हल नहीं है, क्योंकि इनसे या तो भयावह अत्याचारी तानाशाही का जन्म हुआ है या फिर शासन एवं सत्ता का किसी अन्य समूह के हाथों हस्तांतरण भर हुआ है। ऐसी क्रांतियां, कभी भी, अव्यवस्था एवं संघर्ष को समाप्त नहीं कर सकतीं।</p>
<p>But there is a revolution which is entirely different and which must take place if we are to emerge from the endless series of anxieties, conflicts and frustrations in which we are caught. The revolution has to begin, not with theory and ideation, which eventually prove worthless, but with a radical transformation in the mind itself. Such a transformation can be brought about only through right education and the total development of the human being. It is a revolution that must take place in the whole of the mind and not merely in thought. Thought, after all, is only a result and not the source. There must be radical transformation in the source and not mere</p>	<p>किंतु एक ऐसी भी क्रांति है जो सर्वथा भिन्न है, और यदि हमें चिंता, संघर्ष तथा निराशा के अंतहीन सिलसिले से उबरना है जिसकी दलदल में हम धंसे हुए हैं तो ऐसी क्रांति लाज़मी है। ऐसी क्रांति मत-सिद्धांतों के बल पर नहीं होती, जो कि अंततः अर्थहीन ही सिद्ध होते हैं, बल्कि उसकी शुरुआत मन के भीतर ही आमूल परिवर्तन लाने से होती है। वह क्रांति केवल सही शिक्षा तथा मानव के समग्र विकास द्वारा ही लाई जा सकती है। ऐसी क्रांति महज़ विचारों में नहीं, बल्कि संपूर्ण मनोचित्त में होती है। विचार आखिरकार परिणाम मात्र है, मूल नहीं। और परिणाम में नहीं अपितु स्वयं मूलस्रोत में ही परिवर्तन होना है। हम लोग अभी तक केवल परिणामों में, लक्षणों में ही उलझे हुए हैं। हम वह बुनियादी बदलाव नहीं ला पा रहे</p>

<p>modification of the result. At present we are tinkering with results, with symptoms. We are not bringing about a vital change, uprooting the old ways of thought, freeing the mind from traditions and habits. It is with this vital change we are concerned and only right education can bring it into being.</p>	<p>हैं जिससे आदतों, परंपराओं तथा विचारों की पुरानी पद्धतियों का उन्मूलन हो सके। हमारा सरोकार इसी आमूल परिवर्तन से है और केवल सही शिक्षा ही उसे ला पाने में सक्षम है।</p>
<p>To inquire and to learn is the function of the mind. By learning I do not mean the mere cultivation of memory or the accumulation of knowledge, but the capacity to think clearly and sanely without illusion, to start from facts and not from beliefs and ideals. There is no learning if thought originates from conclusions. Merely to acquire information or knowledge, is not to learn. Learning implies the love of understanding and the love of doing a thing for itself. Learning is possible only when there is no coercion of any kind. And coercion takes many forms, does it not? There is coercion through influence, through attachment or threat, through persuasive encouragement or subtle forms of reward.</p>	<p>खोजबीन करना और सीखना ही मन का कार्य है। सीखने का मतलब मात्र स्मृति के संवर्धन और जानकारी के संग्रह से नहीं बल्कि ऐसे चिंतन की क्षमता से है जो सुस्पष्ट, समझदारी भरा एवं भ्रांतिरहित हो, विश्वासों एवं आदर्शों पर नहीं वरन् तथ्यों पर आधारित हो। जहां विचार निष्कर्षों से आते हैं वहां सीखना होता ही नहीं। मात्र सूचना या जानकारी का संग्रह सीखना नहीं है। सीखने का अभिप्राय है समझने की चाह एवं किसी चीज को उसी के लिए करने की लगन। सीखना तो केवल तभी संभव होता है जब किसी भी प्रकार की ज़ोर-ज़बरदस्ती न हो। और यह ज़ोर-ज़बरदस्ती क्या अलग-अलग रूप बदलकर नहीं आती? कभी प्रभाव के रूप में तो कभी मोह या धमकी के रूप में; कभी बहलाने-फुसलाने के तौर पर तो कभी सूक्ष्म तरीकों से पुरस्कारों का लोभ दिखाकर?</p>
<p>Most people think that learning is encouraged through comparison, whereas the contrary is the fact. Comparison brings about frustration and merely encourages envy, which is called competition. Like other forms of persuasion, comparison prevents learning and breeds fear. Ambition also breeds fear. Ambition, whether personal or identified with the collective, is always antisocial. So-called noble ambition in relationship is fundamentally destructive.</p>	<p>बहुत से लोग सोचते हैं कि तुलना करने से सीखने को प्रोत्साहन मिलता है, किंतु तथ्य इसके बिल्कुल विपरीत है। तुलना से निराशा आती है और मात्र ईर्ष्या को बढ़ावा मिलता है जिसे कि प्रतिस्पर्धा कहा जाता है। अनुनय-प्रेरणा के दूसरे रूपों की तरह तुलना भी सीखने की क्रिया में बाधक होती है, और वह भय को जन्म देती है। महत्त्वाकांक्षा से भय पनपता है। महत्त्वाकांक्षा, चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक, वह सदा समाज-विरोधी ही होती है। संबंधों में तथाकथित उदात्त महत्त्वाकांक्षाएं भी मूलतः विनाशकारी ही होती हैं।</p>
<p>It is necessary to encourage the development of a good mind - a mind which is capable of dealing with the many issues of life as a whole, and which does not try to escape from them and so become self-contradictory, frustrated, bitter or cynical. And it is essential for the mind to be aware of its own</p>	<p>यह आवश्यक है कि अच्छे मन के विकास को प्रोत्साहित किया जाए; ऐसा मन जो जीवन के तमाम पहलुओं से समग्र रूप से निपटने में सक्षम हो और जो उनसे भागे नहीं, क्योंकि पलायन से तो वह अंतर्विरोध, निराशा, कटुता और चिड़चिड़ेपन का शिकार हो जाएगा। और, यह भी आवश्यक है कि वह मन स्वयं अपनी संस्कारबद्धता</p>

<p>conditioning, its own motives and pursuits.</p>	<p>के प्रति, अपनी अभिलाषाओं एवं उद्देश्यों के प्रति सजग रहे।</p>
<p>Since the development of a good mind is one of our chief concerns, how one teaches becomes very important. There must be a cultivation of the totality of the mind, and not merely the giving of information. In the process of imparting knowledge, the educator has to invite discussion and encourage the students to inquire and to think independently. Authority, as 'the one who knows,' has no place in learning. The educator and the student are both learning through their special relationship with each other; but this does not mean that the educator disregards the orderliness of thought. Orderliness of thought is not brought about by discipline in the form of assertive statements of knowledge; but it comes into being naturally when the educator understands that in cultivating intelligence there must be a sense of freedom. This does not mean freedom to do whatever one likes, or to think in the spirit of mere contradiction. It is the freedom in which the student is being helped to be aware of his own urges and motives, which are revealed to him through his daily thought and action.</p>	<p>हमारा मुख्य प्रयोजन एक अच्छे मन के विकास से है, इसलिए इसका बहुत महत्त्व हो जाता है कि शिक्षक पढ़ाता कैसे है। शिक्षक का प्रारंभिक उद्देश्य मन की समग्रता का संवर्धन है, न कि मात्र जानकारी प्रदान करना। जानकारी प्रदान करते हुए उसे वार्तालाप और संवाद को बढ़ावा देना होगा और इसी तरह खोजबीन तथा स्वतंत्र चिंतन के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना होगा।</p> <p>सीखने की क्रिया में किसी सत्ता-प्रामाण्य के लिए--जानकारियों के सिंहासन पर आरूढ़ व्यक्ति के लिए--कोई स्थान नहीं है। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही एक विशेष संबंध में जीते हुए साथ-साथ सीख रहे हैं, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि शिक्षक विचार की तरतीबबद्धता व स्पष्टता की उपेक्षा करे। यह स्पष्टता मात्र ज्ञान के विध्यात्मक-निश्चयात्मक वक्तव्यों पर आधारित अनुशासन से नहीं आती; किंतु यह तब सहज ही आ जाती है जब शिक्षक यह समझ ले कि प्रज्ञा के संवर्धन के लिए स्वतंत्रता का माहौल लाजमी है। स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे उसे करें या केवल परस्पर विरोध की भावना से ही सोचें। बात उस स्वतंत्रता की हो रही है जिसमें विद्यार्थी की रोजमर्रा के सोच-विचार एवं क्रियाकलाप में प्रकट हो रहे उसके अपने ही आवेगों और प्रयोजनों के प्रति सजग होने में मदद की जाती है।</p>
<p>A disciplined mind is never a free mind, not can a mind that has suppressed desire ever be free. It is only through understanding the whole process of desire that the mind can be free. Discipline always limits the mind to a movement within the framework of a particular system of thought or belief, does it not? And such a mind is never free to be intelligent. Discipline brings about submission to authority. It gives the capacity to function within the pattern of a society which demands functional ability, but it does not awaken the intelligence which has its own capacity. The mind that has cultivated nothing but capacity through memory is like the modern electronic computer which,</p>	<p>एक अनुशासित मन कभी भी स्वतंत्र नहीं होता और न ही वह मन जिसने इच्छाओं को दबा दिया है। केवल वही मन स्वतंत्र है जो इच्छा की समस्त गतिविधियों को भली प्रकार समझता है। अनुशासन मन को ऐसी गतिविधि में बांध देता है जो विचार एवं विश्वासों के घेरे के भीतर होती है। क्या ऐसा नहीं है? ऐसा मन प्रज्ञाशील होने के लिए कदापि स्वतंत्र नहीं है। ऐसा अनुशासन सत्ता के सम्मुख समर्पण है, वह समाज की निर्धारित पद्धति में कार्य करने की क्षमता देता है, क्योंकि समाज को केवल कार्यकुशलता की फिक्र है; पर वह उस प्रज्ञा को जागृत नहीं करता जिसकी एक अपनी ही सामर्थ्य है, क्षमता है। जिस मन ने केवल स्मृति पर आधारित क्षमता का संवर्धन किया है वह एक आधुनिक यंत्र, एक कम्प्यूटर के समान है, जो हालांकि अद्भुत ढंग से कार्य करने की क्षमता</p>

<p>though it functions with astonishing ability and accuracy, is still only a machine.</p>	<p>रखता है पर है वह मशीन ही।</p>
<p>Authority can persuade the mind to think in a particular direction. But being guided to think along certain lines, or in terms of a foregone conclusion is not to think at all; it is merely to function like a human machine, which breeds thoughtless discontent, bringing with it frustration and other miseries. We are concerned with the total development of each human being, helping him to realize his own highest and fullest capacity - not some fictitious capacity which the educator has in view as a concept or an ideal.</p>	<p>सत्ता-प्रामाण्य मन को केवल किसी निश्चित दिशा में सोचने को ही विवश कर सकता है। सोचना यदि किसी निश्चित मार्ग या निष्कर्षों की ओर ही निर्देशित है तब तो वह सोचना है ही नहीं। वह तो केवल 'मानवीय यंत्र' की भांति कार्य करना है, जो खाली असंतोष उत्पन्न करता है और उसके साथ निराशा तथा दुःख जैसी तमाम चीजें। और यहां तो हम प्रत्येक मनुष्य की उच्चतम तथा पूर्णतम क्षमता का समग्र विकास चाहते हैं--ऐसी किसी कल्पित क्षमता का नहीं जो अध्यापक के दिमाग में किसी धारणा या आदर्श के रूप में बैठी हुई हो।</p>
<p>Any spirit of comparison prevents this full flowering of the individual, whether he is to be a scientist or a gardener. The fullest capacity of the gardener is the same as the fullest capacity of the scientist when there is no comparison; but when comparison comes in, then there is the disparagement and the envious reactions which create conflict between man and man. Like sorrow, love is not comparative; it cannot be compared with the greater or the lesser. Sorrow is sorrow, as love is love, whether it be in the rich or in the poor.</p>	<p>किसी भी प्रकार की तुलना का भाव व्यक्ति के पूर्ण विकास में अवरोध उत्पन्न करता है, चाहे उसे वैज्ञानिक बनना हो या माली। जहां तुलना का भाव नहीं है, वहां एक माली की और एक वैज्ञानिक की पूर्णतम क्षमता एक ही है; किंतु जहां तुलना होने लगती है वहां तिरस्कार तथा ईर्ष्या की भावनाएं आ घेरती हैं, जो मनुष्य-मनुष्य के बीच टकराव कराती हैं। दुख की तरह प्रेम तुलनात्मक नहीं है; इसे अधिक या कम की भाषा में नहीं आंका जा सकता। दुख तो दुख ही है, जिस प्रकार प्रेम प्रेम ही है, चाहे वह निर्धन का हो या धनिक का।</p>
<p>The fullest development of every individual creates a society of equals. The present social struggle to bring about equality on the economic or some spiritual level has no meaning at all. Social-reforms aimed at establishing equality, breed other forms of antisocial activity; but with right education, there is no need to seek equality through social and other reforms, because envy with its comparison of capacities ceases.</p>	<p>प्रत्येक व्यक्ति के परिपूर्ण विकास से उस समाज का उद्भव होता है जहां समता है। मात्र आर्थिक अथवा किसी भावनात्मक-आध्यात्मिक स्तर पर समता लाने हेतु चल रहा सामाजिक संघर्ष बेमानी है। समता लाने के लिए किए गए समाज-सुधार, किसी दूसरी तरह के असामाजिक क्रियाकलापों को जन्म देते हैं। सम्यक् शिक्षा हो तो सामाजिक अथवा अन्य सुधारों की आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी, क्योंकि अपनी तुलनात्मक प्रवृत्तियों के साथ समस्त ईर्ष्या ही समाप्त हो जाएगी।</p>
<p>We must differentiate here between function and status. Status, with all its</p>	<p>यहां हमें काम तथा हैसियत में अंतर करना होगा। तुलना कर किसी कार्य को ऊंचा या नीचा करार</p>

<p>emotional and hierarchical prestige, arises only through the comparison of functions as the high and the low. When each individual is flowering to his fullest capacity, there is then no comparison of functions; there is only the expression of capacity as a teacher, or a prime minister, or a gardener, and so status loses its sting of envy.</p>	<p>देने से ही हैसियत का, अपनी समस्त भावनात्मक एवं श्रेणीबद्ध प्रतिष्ठा के साथ, जन्म होता है। जहां हर व्यक्ति की पूर्णतम क्षमता का विकास हो रहा हो वहां किसी भी कार्य को छोटा-बड़ा कह कर नहीं आंका जाता; वहां केवल क्षमता व्यक्त होती है चाहे वह एक शिक्षक की हो या प्रधानमंत्री की या एक माली की, और इस प्रकार पद में निहित ईर्ष्या-द्वेष का दंश ही समाप्त हो जाता है।</p>
<p>Functional or technical capacity is now recognized through having a degree after one's name; but if we are truly concerned with the total development of the human being, our approach is entirely different. An individual who has the capacity may take a degree and add letters after his name, or he may not, as he pleases. But he will know for himself his own deep capabilities, which will not be framed by a degree, and their expression will not bring about that self-centred confidence which mere technical capacity usually breeds. Such confidence is comparative and therefore antisocial. Comparison may exist for utilitarian purpose; but it is not for the educator to compare the capacities of his students and give greater or lesser evaluation.</p>	<p>आज समाज में नाम के आगे डिग्री लगा लेने से कार्य अथवा तकनीकी क्षमता को मान्यता मिल जाती है, किंतु यदि हम सचमुच मानव का समग्र विकास चाहते हैं तो हमारी सारा दृष्टिकोण ही अलग होगा। तब कोई व्यक्ति जिसके पास क्षमता है वह चाहे तो डिग्री ले या न ले, अपने नाम के आगे उपाधि लगाये या न लगाये, इस बात का महत्त्व नहीं होगा। उसकी क्षमता को उपाधि से नहीं मापा जा सकता किंतु वह स्वयं अपनी योग्यता को जान लेगा और उसकी अपनी क्षमता की अभिव्यक्ति आत्मकेंद्रित विश्वास को नहीं पैदा करेगी जो केवल तकनीकी क्षमता से उत्पन्न होती है; ऐसा आत्मविश्वास तुलना पर आधारित है, इसलिए समाज-विरोधी है। कुछ उपयोगी कार्यों में तुलना की भूमिका हो सकती है; लेकिन शिक्षक के लिए यह ज़रूरी नहीं है कि वह विद्यार्थियों की क्षमताओं की तुलना करे और उसे कम या ज़्यादा करके आंके।</p>
<p>Since we are concerned with the total development of the individual, the student may not be allowed in the beginning to choose his own subjects, because his choice is likely to be based on passing moods and prejudices, or on finding the easiest thing to do; or he may choose according to the immediate demands of a particular need. But if he is helped to discover by himself and cultivate his innate capacities, then he will naturally choose, not the easiest</p>	<p>प्रारंभ में विद्यार्थी को अपने विषयों के चुनाव की अनुमति शायद न भी दी जाए, क्योंकि हम उनका समग्र विकास चाहते हैं। यदि वह विषयों का चुनाव करता है तो उसका चुनाव क्षणिक सुखों, पूर्वाग्रहों और मुश्किल-आसान के मापदंड पर आधारित होगा; या वह अपनी किसी खास तत्कालीन या क्षणिक मांग के अनुसार चुनेगा। लेकिन यदि हम उसकी सहज, बुनियादी क्षमताओं को खोजने और उनका संवर्धन करने में मदद करें तो स्वाभाविक है कि वह सबसे आसान विषय चुनने के बजाय उन विषयों को चुनेगा जिनके</p>

<p>subjects, but those through which he can express his capacities to the fullest and highest extent. If the student is helped from the very beginning to look at life as a whole, with all its psychological, intellectual and emotional problems, he will not be frightened by it.</p>	<p>ज़रिये वह अपनी क्षमताओं को पूर्णतया एवं उच्चतम ढंग से प्रकट कर सके। हम मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक समस्याओं सहित समग्र जीवन के अनेक प्रश्नों से निबटना चाहते हैं। और चूंकि विद्यार्थी की प्रारंभ से ही जीवन को उसके समग्र रूप में देखने में सहायता की जा रही है, इसलिए वह उनसे भयभीत नहीं होगा।</p>
<p>Intelligence is the capacity to deal with life as a whole; and giving grades or marks to the student does not assure intelligence. On the contrary it degrades human dignity. This comparative evaluation cripples the mind - which does not mean that the teacher must not observe the progress of every student and keep a record of it. Parents, naturally anxious to know the progress of their children, will want a report; but, unfortunately, they do not understand what the educator is trying to do, the report will become an instrument of coercion to produce the results they desire, and so undo the work of the educator.</p> <p>Parents should understand the kind of education the school intends to give. Generally they are satisfied to see their children preparing to get a degree of some kind which will assure them of a livelihood. Very few are concerned with more than this. Of course, they wish to see their children happy, but beyond this vague desire very few give any thought to their total development. As most parents desire above all else that their children should have a successful career, they frighten or affectionately bully them into acquiring knowledge, and so the book becomes very important; and with it there is the mere cultivation of memory, the mere repetition without the quality of real thought behind it.</p>	<p>जीवन को समग्रता से जीने की क्षमता ही प्रज्ञा है। छात्रों को श्रेणी तथा अंक प्रदान करने से प्रज्ञा का संवर्धन नहीं होता, बल्कि इसके विपरीत इससे मानव गरिमा का ही पतन हो जाता है। इस तुलनात्मक मूल्यांकन से मन पंगु हो जाता है, जिसका अर्थ यह नहीं है कि अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी की प्रगति पर गौर न करे और उसका लेखा-जोखा न रखे। स्वभावतः अभिभावक अपने बच्चों की प्रगति जानने को उत्सुक रहते हैं। अतः वे उनकी प्रगति-रिपोर्ट चाहेंगे किंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि उस प्रगति-रिपोर्ट का उपयोग वे अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए बच्चे पर दबाव डालने के लिए करेंगे--दबाव चाहे स्नेह का हो या धमकी भरा हो। अभिभावकों को चाहिए कि वे इसे समझें कि हम किस प्रकार की शिक्षा देना चाहते हैं। सामान्यतः वे अपने बच्चों को ऐसी डिग्री हासिल करते देखकर संतुष्ट हो जाते हैं जिससे उनको अच्छी आजीविका पाने का आश्वासन मिल रहा हो। बहुत कम लोग हैं जो इससे अधिक की सोचते हैं। निश्चय ही वे अपने बच्चों को सुखी देखना चाहते हैं। इस धुंधली-सी इच्छा से आगे कुछ चाहने वाले बहुत थोड़े से ही लोग हैं जो बच्चों के समग्र विकास की चिंता करते हों। चूंकि उनमें से अधिकतर लोगों की तो यह अभिलाषा रहती है कि उनके बच्चे रोज़ी कमाने में अच्छी तरह सफल हों, इसलिए वे या तो स्नेह से या भययुक्त दबाव देकर उन्हें किताबी ज्ञान जमा करने को विवश करते हैं, और इस प्रकार पुस्तक का ही बहुत अधिक महत्त्व हो जाता है। इससे मात्र स्मृति का ही संवर्धन हो पाता है--ऐसी स्मृति जो बगैर सही चिंतन की बुनियाद के केवल दोहराव पर ज़ोर देती है।</p>
<p>Perhaps the greatest difficulty the educator has to face is the indifference of parent to a wider and deeper education. Most parents are concerned only with the cultivation of some superficial</p>	<p>शिक्षक को सबसे बड़ी जिस कठिनाई का सामना करना होता है वह है अभिभावक की व्यापक तथा गहरे पैठ कर सकने वाली शिक्षा के प्रति उदासीनता। क्योंकि अभिभावक की रुचि तो</p>

<p>knowledge which will secure their children respectable positions in a corrupt society.</p>	<p>केवल सही जानकारी में ही होती है जो उनके बच्चे को इस भ्रष्ट समाज में एक आदरणीय पद पर आसीन करा दे।</p>
<p>So the educator not only has to educate the children in the right way, but also to see to it that the parents do not undo whatever good may have been done at the school. Really the school and the home should be joint centres of right education, and should in no way be opposed to each other, with the parents desiring one thing and the educator doing something entirely different. It is very important that the parents be fully acquainted with what the educator is doing, and be vitally interested in the total development of their children. It is as much the responsibility of the parents to see that this kind of education is carried out, as it is of the teachers, whose burden is already sufficiently heavy. A total development of the child can be brought about only when there is the right relationship between the teacher, the student and the parents. As the educator cannot yield to the passing fancies or obstinate demands of the parents, it is necessary for them to understand the educator and co-operate with him, and not bring about conflict and confusion in their children.</p>	<p>इस प्रकार, शिक्षक को केवल बच्चों को ही सही दिशा में शिक्षा नहीं देनी है बल्कि यह भी देखना होगा कि विद्यालय में जो कुछ भी किया गया है अभिभावक उस पर पानी न फेर दें। वास्तव में विद्यालय एवं घर, दोनों ही एक-साथ सही शिक्षा के केंद्र होने चाहिए, न कि एक-दूसरे के विरोधी। ऐसा न हो कि अभिभावक की इच्छा तो कुछ और है तथा शिक्षक उससे बिल्कुल भिन्न कुछ और ही कर रहे हैं। यह बड़ा ही महत्वपूर्ण है कि अभिभावक भी उससे भली प्रकार परिचित रहें जो शिक्षक कर रहा है और बच्चों के संपूर्ण विकास में उन्हें भी गहरी दिलचस्पी हो। यह समान रूप से बच्चों के माता-पिता का भी उत्तरदायित्व है कि वे इस प्रकार की शिक्षा को बढ़ावा देने में सहायक हों। वह इसे मात्र अध्यापक के ऊपर ही न छोड़ दें जो पहले से ही काफी भार से लदे हुए हैं। बच्चे का समग्र विकास तभी संभव हो सकेगा जब अध्यापक, विद्यार्थी एवं अभिभावक के बीच सही संबंध की बुनियाद हो। अभिभावकों की आती-जाती कल्पनाओं एवं दुराग्रही मांगों को चूंकि शिक्षक स्वीकार नहीं कर सकता अतः उनके लिए शिक्षक को समझना और उसके साथ सहयोग करना ज़रूरी है और यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि वे अपने बच्चों में द्वंद्व एवं उलझन न पैदा करें।</p>
<p>The child's natural curiosity, the urge to learn exists from the very beginning, and surely this should be intelligently encouraged continually, so that it remains vital and without distortion, and will gradually lead him to the study of a variety of subjects. If this eagerness to learn is encouraged in the child at all times, then his study of mathematics, geography, history, science, or any other subject, will not be a problem to the child or to the educator. Learning is facilitated when there is an atmosphere of happy affection and thoughtful care.</p>	<p>निश्चय ही बच्चे में प्रारंभ से ही सीखने की प्रवृत्ति एवं स्वाभाविक जिज्ञासा रहती है, जिसको बुद्धिमानी के साथ प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, ताकि जब वह बड़ा हो तो उसकी यह जिज्ञासा बिना किसी विकृति के जीवंत बनी रहे और यह उसको धीरे-धीरे विभिन्न विषयों के अध्ययन की ओर ले जाये। यदि सीखने की इस उत्सुकता को सदैव प्रोत्साहन मिलता रहे तो गणित, भूगोल, इतिहास, विज्ञान या प्राणी-शास्त्र जैसे सारे विषय छात्र या अध्यापक के लिए समस्या नहीं बनेंगे। जहां सुखद स्नेह और समझदारी भरी देखभाल का वातावरण होता है, वहां सीखने की प्रक्रिया सरल हो जाती है।</p>
<p>Emotional openness and sensitivity can be cultivated only when the student feels</p>	<p>भावनात्मक खुलेपन और संवेदनशीलता का केवल वहीं संवर्धन-पोषण हो सकता है जहां</p>

secure in his relationship with his teachers. The feeling of being secure in relationship is a primary need of children. There is a vast difference between the feeling of being secure and the feeling of dependency. Consciously or unconsciously, most educators cultivate the feeling of dependency, and thereby subtly encourage fear - which the parents also do in their own affectionate or aggressive manner. Dependency in the child is brought about by authoritarian or dogmatic assertions on the part of parents and teachers as to what the child must be and do. With dependency there is always the shadow of fear, and this fear compels the child to obey, to conform, to accept without thought the edicts and sanctions of his elders. In this atmosphere of dependency, sensitivity is crushed; but when the child knows and feels that he is secure, his emotional flowering is not thwarted by fear.

This sense of security in the child is not the opposite of insecurity. It is the feeling of being at ease, whether in his own home or at school, the feeling that he can be what he is, without being compelled in any way; that he can climb a tree and not be scolded if he falls. He can have this sense of security only when the parents and the educators are deeply concerned with the total welfare of the child.

It is important in a school that the child should feel at ease, completely secure from the very first day. This first impression is of the highest importance. But if the educator artificially tries by various means to gain the child's confidence and allows him to do what he likes, then the educator is cultivating dependency; he is not giving the child the feeling of being secure, the feeling that he is in a place where there are people

विद्यार्थी, अध्यापक के साथ संबंधों में, अपने को सुरक्षित पाता है। संबंधों में सुरक्षित होने की भावना बच्चों की प्राथमिक मांग होती है। परावलंबी होने और सुरक्षित होने की भावना में बहुत बड़ा अंतर है। बहुत-से शिक्षक जाने-अनजाने निर्भरता की भावना का संवर्धन करते हैं और इस प्रकार प्रच्छन्न रूप से भय को बढ़ावा देते हैं। अभिभावक भी स्नेहपूर्ण या आक्रामक रूप से यही करते हैं। बच्चे को 'क्या होना चाहिए' और 'क्या करना चाहिए' इस बारे में अभिभावकों के तानाशाही रवैये या हठधर्मी दुराग्रह के कारण बच्चे में परावलंबन आता है। परावलंबन के साथ सदैव भय की काली छाया बनी रहती है। और यही भय का भूत बच्चे को हर आज्ञा चुपचाप मान लेने को विवश करता है। यही भय उसे समाज की हर बात को मानने तथा बड़ों के आदेश तथा हुक्म को स्वीकार करने को मजबूर करता है। परावलंबन के इस वातावरण में संवेदनशीलता कुचल दी जाती है। किंतु जब बच्चा जानता है और अनुभव करता है कि वह सुरक्षित है, तब असुरक्षा के भय के द्वारा उसका भावनात्मक विकास अवरुद्ध नहीं होता।

बच्चे में सुरक्षा की यह भावना असुरक्षा का उलट नहीं है। यह निश्चित होने का भाव है, चाहे अपने घर में हों या विद्यालय में, जहां वह अपने सहज स्वाभाविक रूप में 'जो वह है' उसी प्रकार रह सके; जहां वह 'ऐसा होने' या 'ऐसा न होने' को विवश नहीं किया जाता; जहां वह चाहे जब पेड़ पर चढ़ सकता है और गिर जाने पर उसे डांट नहीं पड़ती। सुरक्षा की ऐसी भावना उसमें तभी आ सकती है जब शिक्षक एवं अभिभावक दोनों की बच्चे के समग्र कल्याण में बड़ी गहरी दिलचस्पी हो।

यह महत्त्वपूर्ण है कि बच्चा विद्यालय में पहले दिन से ही यह महसूस करने लगे कि वह पूर्ण सुरक्षित है-जैसे अपने घर पर हो। यह पहला इम्प्रेशन, पहला प्रभाव ही सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। किंतु यदि अध्यापक कृत्रिम तरीकों से उसका विश्वास प्राप्त करने का प्रयत्न करता है और इस प्रकार बच्चे को अपनी मनमानी करने देता है, तो वह परावलंबन को बढ़ावा दे रहा है और बच्चे को सुरक्षित होने का एहसास नहीं दे रहा--वह भाव कि वह एक ऐसी जगह में है जहां लोग पूरे दिल

<p>who are deeply concerned with his total welfare.</p>	<p>से उसके भले के लिए फिक्रमंद हैं।</p>
<p>The very first impact of this new relationship based on confidence, which the child may never have had before, will help towards a natural communication, without the young regarding the elders as a threat to be feared. A child who feels secure has his own natural ways of expressing the respect which is essential for learning. This respect is denuded of all authority and fear. When he has a feeling of security, the child's conduct or behaviour is not something imposed by an elder, but becomes part of the process of learning. Because he feels secure in his relationship with the teacher, the child will naturally be considerate; and it is only in this atmosphere of security that emotional openness and sensitivity can flower. Being at ease, feeling secure, the child will do what he likes; but in doing what he likes, he will find out what is the right thing to do, and his conduct then will not be due to resistance, or obstinacy, or suppressed feelings, or the mere expression of a momentary urge.</p>	<p>आत्मविश्वास पर आधारित इस नये संबंध का पहला प्रभाव ही, जिसका अनुभव बच्चे ने शायद ही पहले कभी किया हो--एक सहज संवाद में सहायक होगा--जिसमें छोटे, बड़ों की ओर खतरे की निगाह से नहीं देखेंगे जिनसे डरने की ज़रूरत हो। जो बच्चा सुरक्षित अनुभव करता है उसका आदर देने का एक अपना ही स्वाभाविक ढंग होता है जो सीखने के लिए लाज़मी है। इस आदर में किसी सत्ता या भय का कोई स्थान नहीं होता। इस सुरक्षा की भावना में चरित्र तथा व्यवहार बड़ों द्वारा थोपा नहीं जाता, अपितु वह तो सीखने की प्रक्रिया का ही हिस्सा हो जाता है। चूंकि बच्चा शिक्षक के साथ अपने संबंधों में खुद को सुरक्षित महसूस करता है इसलिए वह अपने आप हर चीज़ का ख्याल करेगा। केवल ऐसी सुरक्षा के वातावरण में ही भावनात्मक खुलेपन एवं संवेदनशीलता का विकास हो सकता है। घर जैसा माहौल लिए इस सुरक्षा के वातावरण में बच्चा जो चाहता है करता है किंतु ऐसा करते हुए वह यह भी जान लेता है कि उचित क्या है, ठीक क्या है, और इस तरह उसका आचरण किसी प्रतिरोध, ज़िद्द या दबी हुई भावनाओं या किसी क्षणिक आवेग के कारण नहीं होगा।</p>
<p>Sensitivity means being sensitive to everything around one - to the plants, the animals, the trees, the skies, the waters of the river, the bird on the wing; and also to the moods of the people around one, and to the stranger who passes by. This sensitivity brings about the quality of uncalculated, unselfish response, which is the morality and conduct. Being sensitive, the child in his conduct will be open and not secretive; therefore a mere suggestion on the part of the teacher will be accepted easily, without resistance or friction.</p>	<p>संवेदनशीलता का अभिप्राय अपने इर्द-गिर्द की सभी चीज़ों के प्रति संवेदनशील होना है। चाहे पौधे हों या पशु या पेड़, चाहे आकाश, जल या उड़ता पक्षी; अपने इर्द-गिर्द के लोगों के विभिन्न भावों के प्रति संवेदनशीलता और राह चलते किसी अनजान राही के प्रति भी संवेदनशीलता। यह संवेदनशीलता उस भावना को लाती है जो हिसाब-किताब एवं स्वार्थ से परे है, यही है नैतिकता एवं सच्चा आचरण। संवेदनशील होने की वजह से उसका आचरण गुप्त न होकर खुला हुआ होगा। इसलिए अध्यापक का रंचमात्र भी सुझाव, बिना किसी संघर्ष या प्रतिरोध के, सरलता से स्वीकार कर लिया जाएगा।</p>
<p>As we are concerned with the total development of the human being, we must understand his emotional urges, which are very much stronger than intellectual reasoning; we must cultivate emotional capacity and not help to</p>	<p>चूंकि हम मानव का समग्र विकास चाहते हैं इसलिए हमें उसकी भावनात्मक प्रेरणाओं को, जो कि बौद्धिक तर्कों से बहुत अधिक बलशाली होती हैं, समझना चाहिए और भावनात्मक क्षमता का संवर्धन करना चाहिए न कि उसे दबाना। जब हम</p>

<p>suppress it. When we understand and are therefore capable of dealing with emotional as well as intellectual issues, there will be no sense of fear in approaching them.</p>	<p>में यह समझदारी होगी और इस प्रकार भावनात्मक एवं बौद्धिक समस्याओं से निपटने की क्षमता होगी तो फिर उनका सामना करने में लेशमात्र भी भय नहीं रहेगा।</p>
<p>For the total development of the human being, solitude as a means of cultivating sensitivity becomes a necessity. One has to know what it is to be alone, what it is to meditate, what it is to die; and the implications of solitude, of meditation, of death, can be known only by seeking them out. These implications cannot be taught, they must be learnt. One can indicate, but learning by what is indicated is not the experiencing of solitude or meditation. To experience what is solitude and what is meditation, one must be in a state of inquiry; only a mind that is in a state of inquiry is capable of learning. But when inquiry is suppressed by previous knowledge, or by the authority and experience of another, then learning becomes mere imitation, and imitation causes a human being to repeat what is learnt without experiencing it.</p>	<p>मानव के समग्र विकास के संदर्भ में संवेदनशीलता को पोषित करने के लिए एकांत परम आवश्यक है। यह जानना आवश्यक है कि एकाकी होना क्या होता है, ध्यान करना क्या है, मरना क्या है। एकांत, ध्यान, मृत्यु--इस सब के बारे में हम तभी जान सकते हैं जब हम इसकी खोज करें। इनके अर्थ को सिखाया तो नहीं जा सकता किंतु सीखा अवश्य जा सकता है। कोई इसका संकेत मात्र दे सकता है, किंतु संकेत के द्वारा सीखना एकांत या ध्यान का अनुभव करना नहीं है। एकांत या ध्यान क्या है, यह जानने के लिए खोजबीन, अन्वेषण की अवस्था में आना होगा। जो मन खोजबीन की अवस्था में होता है वही सीखने में समर्थ है। किंतु जब यह खोजबीन किसी पूर्व ज्ञान द्वारा या सत्ता द्वारा या दूसरे के अनुभव द्वारा दबा दी जाती है, तो सीखना मात्र अनुकरण बनकर रह जाता है। और अनुकरण या नकल, सीखने की अनुभूति को महत्त्व न देकर हमें केवल रट्टू तोता ही बना डालती है।</p>
<p>Teaching is not the mere imparting of information but the cultivation of an inquiring mind. Such a mind will penetrate into the question of what is religion, and not merely accept the established religions with their temples and rituals. The search for God, or truth, or whatever one may like to name it - and not the mere acceptance of belief and dogma - is true religion. Just as the student cleans his teeth every day, bathes every day, learns new things every day, so also there must be the action of sitting quietly with others or by himself. This solitude cannot be brought about by instruction, or urged by the external authority of tradition, or induced by the influence of those who want to sit quietly but are incapable of being alone. Solitude helps the mind to see itself clearly as in a mirror, and to free itself from the vain endeavour of ambition with all its complexities, fears and frustrations,</p>	<p>शिक्षण केवल जानकारी प्रदान करना नहीं है बल्कि खोजी मन को तैयार करना है। ऐसा मन 'धर्म क्या है' जैसे प्रश्न की गहराई में उतर सकेगा और केवल स्थापित धर्म, मंदिर या कर्मकांड को ही स्वीकार नहीं कर लेगा। ईश्वर की खोज, सत्य की खोज या जो भी नाम आप देना चाहें, यही सच्चा धर्म है, न कि केवल विश्वास एवं सिद्धांत को मान लेना। जैसे विद्यार्थी नित्य अपने दांत साफ करता है, प्रतिदिन स्नान करता है, हर रोज़ कुछ नया सीखा करता है, उसी प्रकार शांतिपूर्वक किसी अन्य के साथ या स्वयं अकेले ही बैठना निहायत जरूरी है। यह एकांत किसी के सिखाने से या परंपराओं के दबाव या प्रभाव से नहीं आता, न ही उन लोगों की प्रेरणा से आता है जो शांत बैठना तो चाहते हैं किंतु एकाकी होने में सक्षम नहीं है; एकांत, स्वयं को स्पष्ट रूप से देखने में मन की ऐसे मदद करता है जैसे एक आईना, और साथ ही मन को महत्त्वाकांक्षा की फिजूल की भागदौड़ से और उसके साथ जुड़ी समस्त जटिलताओं, डरों और कुंठाओं से--जो कि अहंकेंद्रित क्रियाओं का नतीजा है--आजाद करता है। यह एकांत मन को ऐसी</p>

<p>which are the outcome of self-centred activity. Solitude gives to the mind a stability, a constancy which is not to be measured in terms of time. Such clarity of mind is character. The lack of character is the state of self-contradiction.</p>	<p>सुदृढ़ता, ऐसी स्थिरता देता है, जिसको समय के माप से नापा नहीं जा सकता। मन की यह सुस्पष्टता ही चरित्र है। चरित्र का अभाव अंतर्विरोध की स्थिति है।</p>
<p>To be sensitive is to love. The word 'love' is not love. And love is not to be divided as the love of God and the love of man, nor is it to be measured as the love of the one and of the many. Love gives itself abundantly as a flower gives its perfume; but we are always measuring love in our relationship and thereby destroying it.</p> <p>Love is not a commodity of the reformer or the social worker; it is not a political instrument with which to create action. When; the politician and the reformer speak of love, they are using the word and do not touch the reality of it; for love cannot be employed as a means to an end, whether in the immediate or in the far-off future. Love is of the whole earth and not of a particular field or forest. The love of reality is not encompassed by any religion; and when organized religions use it, it ceases to be. Societies, organized religions and authoritarian governments, sedulous in their various activities, unknowingly destroy the love that becomes passion in action.</p>	<p>संवेदनशील होना ही प्रेम करना है। 'प्रेम' शब्द प्रेम नहीं है। प्रेम को विभाजित नहीं किया जा सकता, जैसे कि ईश्वर का प्रेम तथा मनुष्य का प्रेम। प्रेम मापा भी नहीं जा सकता है, कि एक का प्रेम या अनेक का प्रेम। प्रेम यानी अपना सब कुछ दे देने की क्षमता, जैसे एक फूल अपनी सारी खुशबू दे देता है। किंतु हम लोग हमेशा इसे अपने संबंधों में नापते हैं और इसलिए उसे नष्ट कर देते हैं।</p> <p>प्रेम वस्तुतः समाज-सुधारक या सामाजिक कार्यकर्ता का कार्यक्षेत्र नहीं है; यह कोई राजनीतिक साधन भी नहीं है जिससे कुछ हासिल किया जा सके। जब समाज-सुधारक या राजनीतिज्ञ इसकी बात करते हैं तो वे केवल इस शब्द का उपयोग करते हैं और इसकी वास्तविकता से उनका कोई लेना-देना नहीं होता। क्योंकि प्रेम का किसी साध्य के लिए साधन के रूप में उपयोग नहीं हो सकता, चाहे वह साध्य तात्कालिक हो या सुदूर भविष्य का हो। प्रेम तो समस्त पृथ्वी का होता है न कि उसमें से किसी विशेष क्षेत्र या जंगल का। वास्तविकता के प्रति प्रेम किसी धर्म के घेरे में नहीं रहता। और जब संगठित धर्म इसका उपयोग करते हैं तो उसका वजूद ही नहीं रहता। समाज, संगठित धर्म तथा सत्ताशील सरकारें, अपनी विभिन्न क्रियाओं द्वारा अनजाने ही उस प्रेम को विनष्ट कर डालती हैं जो कर्म में जीवंतता एवं उत्कटता लाता है।</p>
<p>In the total development of the human being through right education, the quality of love must be nourished and sustained from the very beginning. Love is not sentimentality, nor is it devotion. It is as strong as death. Love cannot be bought through knowledge; and a mind that is pursuing knowledge without love is a mind that deals in ruthlessness and aims merely at efficiency.</p>	<p>सही शिक्षा द्वारा मानव के संपूर्ण विकास के लिए बिल्कुल प्रारंभ से ही प्रेम के गुण का पोषण और संवर्धन बहुत आवश्यक है। प्रेम न तो भावुकता है और न श्रद्धा-निष्ठा। वह वैसा ही शक्तिशाली है जैसी कि मृत्यु। उसे ज्ञान के द्वारा खरीदा नहीं जा सकता। और ऐसा मन जो प्रेम के बिना केवल ज्ञान पाने के पीछे लगा है, निर्दयता का जीवन जीता है और उसका लक्ष्य मात्र कार्यकुशलता रह जाता है।</p>
<p>So the educator must be concerned from the very beginning with this quality of love, which is humility, gentleness,</p>	<p>इसलिए शिक्षक को बिल्कुल प्रारंभ से ही प्रेम के इस गुण की ओर ध्यान देना चाहिए, प्रेम यानी विनम्रता, मृदुता, दूसरों का ख्याल रखना, धैर्य तथा</p>

<p>consideration, patience and courtesy. Modesty and courtesy are innate in the man of right education; he is considerate to all, including the animals and plants, and this is reflected in his behaviour and manner of talking.</p>	<p>शिष्टता। सही शिक्षा पाए हुए मनुष्य के स्वभाव में शिष्टता और शालीनता होती ही है। अपने इर्द-गिर्द की सभी चीजों का वह ख्याल रखता है, चाहे वे पौधे हों या पशु हों, और यह उसके व्यवहार तथा बातचीत के ढंग में प्रकट होता है।</p>
<p>The emphasis on this quality of love frees the mind from its absorption in its ambition, greed and acquisitiveness. Does not love have about it a refinement which expresses itself as respect and good taste? Does it not also bring about the purification of the mind, which otherwise has a tendency to strengthen itself in pride? Refinement in behaviour is not a self-imposed adjustment or the result of an outward demand; it comes spontaneously with this quality of love. When there is the understanding of love, then sex and all the complications and subtleties of human relationship can be approached with sanity and not with excitement and apprehension.</p>	<p>प्रेम के इस गुण पर विशेष ज़ोर देने से मन फिर अपनी महत्त्वाकांक्षा, लोभ तथा परिग्रह की वृत्ति में ही डूबा हुआ नहीं रहता। क्या यह प्रेम अपने चारों ओर ऐसी निर्मलता नहीं फैलाता जिसकी अभिव्यक्ति आदर और सुरुचि के रूप में होती है? क्या उससे मन भी स्वच्छ-निर्मल नहीं हो जाता? अन्यथा तो मन में अभिमान की प्रवृत्ति मज़बूत ही होती चली जाती है। व्यवहार की यह निर्मलता अपने में ज़ोर-ज़बरदस्ती से सुधार लाना नहीं है और न ही यह किसी बाहरी मांग का नतीजा है बल्कि यह प्रेम के गुण के साथ स्वतः आती है। प्रेम की गहरी समझ होने पर काम-वासना या अन्य मानवीय संबंधों की पेचीदगियों एवं बारीकियों को समझदारी और विवेक से सुलझाया जा सकता है, बिना उत्तेजनाओं एवं आशंकाओं में उलझे।</p>
<p>The educator to whom the total development of the human being is of primary importance, must understand the implications of the sexual urge which plays such an important part in our life, and be able from the very beginning to meet the children's natural curiosity without arousing a morbid interest. Merely to impart biological information at the adolescent age may lead to experimental lust if the quality of love is not felt. Love cleanses the mind of evil. Without love and understanding on the part of the educator, merely to separate the boys from the girls, whether by barbed wire or by edicts, only strengthens their curiosity and stimulates that passion which is bound to degenerate into mere satisfaction. So it is important that boys and girls be educated together rightly.</p>	<p>जिस शिक्षक के लिए मानव का समग्र विकास सबसे अहम है, उसके लिए काम-भावना के निहितार्थों को समझना निहायत ज़रूरी है जो कि हमारे जीवन में इतनी अहम भूमिका निभाती है, और उसमें शुरू से ही उसके बारे में बच्चों के भीतर विकृत दिलचस्पी जगाए बिना उनकी जिज्ञासा का ठीक से समाधान करने की क्षमता होनी चाहिए। प्रेम के गुण को महसूस किये बिना किशोरावस्था में उस बारे में जीव-विज्ञान संबंधी जानकारी देने से वह प्रायोगिक वासना का रूप ले सकता है। प्रेम मन की सारी बुराई को धो डालता है। शिक्षक के भीतर प्रेम और समझ के अभाव में लड़के एवं लड़कियों के बीच की दूरी--चाहे कंटीले तारों के माध्यम से थोपी गयी हो या कड़े नियमों के ज़रिए--निश्चय ही उनमें उत्सुकता तथा वासना के आवेग को और भड़काएगी और फिर मात्र इच्छापूर्ति में, संतुष्टि में उनका पतन होना स्वाभाविक है। इसलिए यह आवश्यक है कि लड़के और लड़कियों को साथ-साथ सही ढंग से शिक्षित किया जाए।</p>
<p>This quality of love must express itself also in doing things with one's hands, such as gardening, carpentry, painting,</p>	<p>प्रेम का यह गुण किसी भी कार्य को अपने हाथों से करने में अभिव्यक्त होगा ही, चाहे वह बागवानी का काम हो या बड़ईगिरी का, चित्रकारी</p>

<p>handicrafts; and through the senses, as seeing the trees, the mountains, the richness of the earth, the poverty that men have created amongst themselves; and in healing music, the song of the birds, the murmur of running waters.</p>	<p>का हो या हस्तशिल्प का; यह गुण इंद्रियों के माध्यम से भी अभिव्यक्त होगा, जैसे वृक्षों को, पर्वतों को, जल प्रवाह को, वसुधा के वैभव को तथा मनुष्यों की अपनी ही खुराफात की वजह से फैली गरीबी को देखने में; और अभिव्यक्त होगा स्वास्थ्यप्रद संगीत में, पक्षियों के गीत में, कलकल बहते पानी में।</p>
<p>We are concerned not only with the cultivation of the mind and the awakening of emotional sensitivity, but also with a well-rounded development of the physique, and to this we must give considerable thought. For if the body is not healthy, vital, it will inevitably distort thought and make for insensitivity. This is so obvious that we need not go into it in detail. It is necessary that the body be in excellent health, that it be given the right kind of food and have sufficient sleep. If the senses are not alert, the body will impede the total development of the human being. To have grace of movement and well-balanced control of the muscles, there must be various forms of exercise, dancing and games. A body that is not kept clean, that is sloppy and does not hold itself in good posture, is not conducive to sensitivity of mind and emotions. The body is not the instrument of the mind, but body, emotions and mind make up the total human being, and unless they live together harmoniously, conflict is inevitable. Conflict makes for insensitivity. The mind may dominate the body and suppress the senses, but it thereby makes the body insensitive; and an insensitive body becomes a hindrance to the full flight of the mind. The mortification of the body is definitely not conducive to the seeking out of the deeper layers of consciousness; for this is possible only when the mind, the emotions and the body are not in contradiction with each other, but are integrated and in unison, effortlessly, without being driven by any concept, belief or ideal.</p>	<p>हमारा सरोकार केवल मन और भावनात्मक संवेदनशीलता के जागरण से ही नहीं है बल्कि शरीर के सर्वांगीण विकास से भी है जिसकी तरफ हमें खूब ध्यान देना होगा। क्योंकि यदि शरीर स्वस्थ और प्राणवान नहीं है तो स्पष्ट है कि वह विचार में भी विकृति लाएगा और असंवेदनशीलता को बढ़ाएगा। यह बिल्कुल स्पष्ट है और इसके विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। यह आवश्यक है कि सही भोजन किया जाए, पर्याप्त नींद ली जाए और शरीर का स्वास्थ्य उत्तम हो। यदि इंद्रियां सजग एवं संवेदनशील नहीं हैं तो शरीर मानव के समग्र विकास में बाधा डालेगा। मांसपेशियों के संतुलित नियंत्रण एवं उनकी गतिविधि और क्रिया में शोभा बनाए रखने के लिए अनेक प्रकार के व्यायाम, नृत्य तथा खेल ज़रूरी हैं। जो शरीर साफ-सुथरा नहीं है, जो ठीक आसन में अपने को रख नहीं सकता है, जो बेढंगा है, वह मन एवं भावनाओं की संवेदनशीलता का संवाहक नहीं बन सकता। शरीर मन का उपकरण नहीं है किंतु शरीर, भावनाएं और मन सभी मिलकर पूर्ण मानव बनते हैं, और इन सब में लयबद्धता और सामंजस्य न हो तो टकराव अनिवार्य है।</p> <p>संघर्ष, टकराव, असंवेदनशीलता लाता है। मन शरीर पर नियंत्रण या आधिपत्य रख सकता है, इंद्रियों का दमन करते हुए शरीर को संवेदनाशून्य बना सकता है। ऐसा संवेदनाशून्य शरीर मन की पूर्ण उड़ान में बाधक बनता है। शरीर का ज़बरदस्ती से किया हुआ दमन कभी भी चेतना के गहनतर स्तर के अन्वेषण में सहायक नहीं बन सकता। वह अन्वेषण तभी संभव होता है जब मन, भावनाओं और शरीर के बीच अंतर्विरोध न हो, बल्कि वे बिना प्रयास के, किसी धारणा, विश्वास एवं आदर्श से प्रेरित हुए बिना, अखंडता और सामंजस्य में रहें।</p>

<p>In the cultivation of the mind, our emphasis should not be on concentration, but on attention. Concentration is a process of forcing the mind to narrow down to a point, whereas attention is without frontiers. In that process the mind is always limited by a frontier or boundary, but when our concern is to understand the totality of the mind, mere concentration becomes a hindrance. Attention is limitless, without the frontiers of knowledge. Knowledge comes through concentration, and any extension of knowledge is still within its own frontiers. In the state of attention the mind can and does use knowledge, which of necessity is the result of concentration; but the part is never the whole, and adding together the many parts does not make for the perception of the whole. Knowledge which is the additive process of concentration, does not bring about the understanding of the immeasurable. The total is never within the brackets of a concentrated mind.</p> <p>So attention is of primary importance, but it does not come through the effort of concentration. Attention is a state in which the mind is ever learning without a centre around which knowledge gathers as accumulated experience. A mind that is concentrated upon itself uses knowledge as a means of its own expansion; and such activity becomes self-contradictory and antisocial.</p>	<p>मन के संवर्धन में एकाग्रता पर नहीं बल्कि अवधान पर बल होना चाहिए। मन को एक बिंदु पर ज़बरदस्ती केंद्रित करने की प्रक्रिया को एकाग्रता कहते हैं, जबकि अवधान निःसीम होता है। एकाग्रता में मन सदा सीमाओं या दीवारों के घेरे में रहता है, किंतु जब हमारा संबंध मन की समग्रता के बोध से होता है तो मात्र एकाग्रता बाधक बन जाती है। अवधान निःसीम होता है, ज्ञान की सारी सीमाओं से परे होता है। ज्ञान एकाग्रता द्वारा आता है, और ज्ञान का विस्तार भी उसी एकाग्रता की सीमा के अंदर ही होता है। अवधान की अवस्था में मन ज्ञान का प्रयोग कर सकता है, और करता भी है—उस ज्ञान का जो एकाग्रता का ही परिणाम है। अंश कभी पूर्ण नहीं होता, और बहुत से अंशों को साथ जोड़ लेने से समग्र की दृष्टि नहीं मिल जाती। और ज्ञान तो एकाग्रता की, जोड़-तोड़ कर संग्रह करने वाली प्रक्रिया मात्र है, इसलिए वह अपरिमेय का बोध नहीं करा सकता। जो समग्र है वह किसी एकाग्र मन के सीमित दायरे में कदापि नहीं समा सकता।</p> <p>अतः अवधान की सबसे ज़्यादा अहमियत है, लेकिन यह एकाग्रता के प्रयास से नहीं आता। यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें मन, बिना किसी केंद्र के—जिसके चारों ओर अनुभव के रूप में ज्ञान एकत्र होता है—सदा सीखता रहता है। ऐसा मन जो स्व-केंद्रित है, ज्ञान का प्रयोग आत्म-प्रसार के लिए ही करता है, और इस प्रकार ऐसी क्रिया अंतर्विरोधी एवं असामाजिक बन जाती है।</p>
<p>Learning in the true sense of the word is possible only in that state of attention, in which there is no outer or inner compulsion. Right thinking can come about only when the mind is not enslaved by tradition and memory. It is attention that allows silence to come upon the mind, which is the opening of the door to creation. That is why attention is of the highest importance.</p>	<p>सच्चे अर्थ में सीखना तभी संभव होता है जब हम अवधान की उस अवस्था में होते हैं जहां किसी प्रकार की बाहरी या भीतरी बाध्यता नहीं होती। जब मन परंपरा तथा स्मृति से बंधा नहीं होता, तभी सही चिंतन हो सकता है। अवधान में ही मन के भीतर मौन का अवतरण होता है, जो सृजन के द्वार को खोलता है। इसीलिए तो अवधान सर्वोच्च महत्त्व की चीज़ है।</p>
<p>Knowledge is necessary at the functional level as a means of cultivating the mind, and not as an end in itself. We are</p>	<p>ज्ञान व्यवहारिक स्तर पर मन के संवर्धन के एक साधन के रूप में आवश्यक है, पर स्वयं में एक साध्य नहीं है। हमारा संबंध मात्र किसी एक</p>

<p>concerned, not with the development of just one capacity, such as that of a mathematician, or a scientist, or a musician, but with the total development of the student as a human being.</p>	<p>क्षमता के विकास से नहीं है, जैसे गणितज्ञ या वैज्ञानिक या संगीतज्ञ की क्षमता, अपितु विद्यार्थी के समग्र विकास से है ।</p>
<p>How is the state of attention to be brought about? It cannot be cultivated through persuasion, comparison, reward or punishment, all of which are forms of coercion. The elimination of fear is the beginning of attention. Fear must exist as long as there is an urge to be or to become, which is the pursuit of success, with all its frustrations and tortuous contradictions. You can't teach concentration, but attention cannot be taught just as you cannot possibly teach freedom from fear; but we can begin to discover the causes that produce fear, and in understanding these causes there is the elimination of fear. So attention arises spontaneously when around the student there is an atmosphere of well-being, when he has the feeling of being secure, of being at ease, and is aware of the disinterested action that comes with love. Love does not compare, and so the envy and torture of 'becoming' ceases.</p>	<p>अवधान की यह अवस्था लाई कैसे जाती है? यह किसी भी प्रकार के समझाने से, तुलना से, पुरस्कार या दंड से नहीं लाई जा सकती। ये सभी जोर-ज़बरदस्ती के ही तरीके हैं। भय की निवृत्ति ही अवधान का प्रारंभ है। भय की अवस्था तब तक बनी रहेगी जब तक कुछ होने की या बनने की लालसा बनी है, जो कि सफलता के पीछे भागना है और जिसके साथ सारी हताशाएं तथा पीड़ादायक अंतर्विरोध जुड़े हुए हैं। जिस प्रकार आप यह सिखा नहीं सकते कि भय से कैसे मुक्त हों, उसी प्रकार अवधान को सिखाया नहीं जा सकता; किंतु हम भय पैदा करने वाले कारणों की खानबीन कर सकते हैं और इनको समझ लेने में ही भय का विसर्जन है। अतः अवधान का आगमन तभी होता है जब विद्यार्थी के चारों ओर कल्याण का वातावरण हो, सुरक्षा की भावना हो, निश्चिंतता हो, और निष्काम कर्म का एहसास हो जो प्रेम के साथ ही उदित होता है। प्रेम तुलना नहीं करता, और इसलिए डाह और कुछ बनने की यातना का अंत हो जाता है।</p>
<p>The general discontent which all of us experience, whether young or old, soon finds a way to satisfaction, and thus our minds are put to sleep. Discontent is awakened from time to time through suffering, but the mind again seeks a gratifying solution. In this wheel of dissatisfaction and gratification the mind is caught, and the constant awakening through pain is part of our discontent. Discontent is the way of inquiry, but there can be no inquiry if the mind is tethered to tradition, to ideals. Inquiry is the flame of attention.</p>	<p>सामान्य असंतोष, जो हम सभी अनुभव करते हैं, चाहे हम युवक हों अथवा वृद्ध, शीघ्र ही संतोष का मार्ग ढूंढ लेता है, और इस प्रकार हमारा मन सुला दिया जाता है। समय-समय पर दुख के द्वारा असंतोष का जन्म होता है, पर मन फिर से कोई संतोषप्रद समाधान ढूंढ लेता है। इस प्रकार संतोष और असंतोष के इस चक्र में मन फंस जाता है और पीड़ा के द्वारा जो अविचल जागृति कौंधती है वह हमारे असंतोष का ही अंग है। असंतोष खोज करने का एक मार्ग है। और जहां मन परंपरा तथा आदर्शों से आबद्ध है, वहां खोज नहीं हो सकती। खोजबीन ही सजगता की ज्वाला है।</p>
<p>By discontent I mean that state in which the mind understands what is, the actual, and constantly inquires to discover further. Discontent is a movement to go beyond the limitations of what is; and if you find ways and means of smoothing</p>	<p>असंतोष से हमारा अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें मन 'जो है' को, यथार्थ को समझता है और खोज में लगा रहता है। 'जो है' की सीमाओं से परे जाने की गति ही असंतोष है। यदि आप इस असंतोष को दबाते हैं या इस पर विजय प्राप्त</p>

<p>or overcoming discontent, then you will accept the limitations of self-centred activity and of the society in which you find yourself.</p>	<p>करने के साधनों और मार्गों को ढूँढते हैं, तो आप अहं-केंद्रित क्रियाओं की तथा उस समाज की सीमाओं को स्वीकार कर रहे होते हैं, जिसमें आप अपने को पाते हैं।</p>
<p>Discontent is the flame which burns away the dross of satisfaction, but most of us seek to dissipate it in various ways. Our discontent then becomes the pursuit of 'the more', the desire for a bigger house, a better car, and so on, all of which is within the field of envy; and it is envy that sustains such discontent. But I am talking of a discontent in which there is no envy, no greed for 'the more', a discontent that is not sustained by any desire for satisfaction, This discontent is an unpolluted state which exists in each one of us, if it is not deadened through wrong education, through gratifying solutions, through ambition, or through the pursuit of an ideal. When we understand the nature of real discontent, we shall see that attention is part of this burning flame which consumes the pettiness and leaves the mind free of the limitations of self-enclosing pursuits and gratifications.</p>	<p>असंतोष तो वह ज्वाला है जो संतोष के कूड़े-करकट को जला देती है किंतु हम इस असंतोष को विभिन्न ढंगों से बेकार गंवा देते हैं। हमारा असंतोष तब 'और अधिक' की खोज बन जाता है, अर्थात् एक बड़े मकान, एक बेहतर कार आदि की इच्छा और यह सब डाह और ईर्ष्या के क्षेत्र की वस्तुएं हैं, और यह ईर्ष्या इस तरह के असंतोष को जीवित रखती है। किंतु हम उस असंतोष की बात कर रहे हैं जिसमें ईर्ष्या तथा 'और अधिक' का लोभ नहीं है यानी यह असंतोष संतोष की इच्छा से पोषित नहीं होता। यह असंतोष एक अदूषित स्थिति है जो हम सभी में विद्यमान है, यदि इसे गलत शिक्षा द्वारा, किसी संतोषप्रद समाधान द्वारा, महत्त्वाकांक्षा या किसी आदर्श के अनुसरण द्वारा निष्प्राण न बना दिया गया हो। जब हम वास्तविक असंतोष के स्वरूप को समझ लेते हैं तब हम देखेंगे कि अवधान उस प्रज्वलित ज्वाला का ही अंश है जो क्षुद्रता को जला देती है और मन को अहं-परिमित कार्यों तथा आत्म-संतोष की सीमाओं से मुक्त कर देती है।</p>
<p>So attention comes into being only when there is inquiry not based on self-advancement or gratification. This attention must be cultivated in the child, right from the beginning. You will find that when there is love - which expresses itself through humility, courtesy, patience, gentleness - you are already free of the barriers which insensitivity builds; and so you are helping to bring about in the child this state of attention from a very tender age.</p>	<p>अतः अवधान का उदय वहीं होता है जहां ऐसी खोजबीन होती है जो आत्म-प्रगति या आत्म-संतोष पर आधारित नहीं है। इस अवधान का संवर्धन बच्चे में प्रारंभ से ही होना चाहिए। आप पाएंगे कि जब प्रेम होता है, जो विनम्रता, शिष्टता, धैर्य तथा सौम्यता के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करता है, तो आप उन अवरोधों से तत्काल मुक्त हो जाते हैं जो संवेदनशीलता की कमी से पैदा होते हैं। और इस प्रकार आप बच्चे में शैशवावस्था से ही अवधान के पनपने में सहायता करते हैं।</p>
<p>Attention is not something to be learnt, but you can help to awaken it in the student by not creating around him that sense of compulsion which produces a self-contradictory existence. Then his attention can be focussed at any moment on any given subject, and it will not be the narrow concentration brought about through the compulsive urge of</p>	<p>अवधान को सिखाया नहीं जा सकता, किंतु विद्यार्थी के अंदर इसे जगाने में हम मददगार हो सकते हैं, बशर्ते कि हम इस बात का ध्यान रखें कि उसके चारों ओर बाध्यता का वातावरण न बने जो एक अंतर्विरोधी वजूद को ही जन्म देगा। तब यह अवधान किसी भी क्षण किसी भी विषय पर केंद्रित किया जा सकेगा, और यह वैसी संकीर्ण एकाग्रता नहीं होगी जो कुछ अर्जित करने या प्राप्त</p>

acquisition or achievement.	करने की बाध्यकारी प्रेरणा के द्वारा लाई जाती है।
<p>A generation educated in this manner will be free of acquisitiveness and fear, the psychological inheritance of their parents and of the society in which they are born; and because they are so educated, they will not depend on the inheritance of property. This matter of inheritance destroys real independence and limits intelligence; for it breeds a false sense of security, giving a self-assurance which has no basis and creating a darkness of the mind in which nothing new can flourish. But a generation educated in this totally different manner which we have been considering will create a new society; for they will have the capacity born of that intelligence which is not hedged about by fear.</p>	<p>इस प्रकार शिक्षित की गई पीढ़ी अपने माता-पिता एवं समाज--जिसमें वह जन्मी है--की संगृहवृत्ति से, उनके डर से, उनकी मानसिक विरासत से मुक्त होगी। और चूंकि वे इस प्रकार शिक्षित हुए हैं इसलिए संपत्ति के उत्तराधिकार पर भी वे आश्रित नहीं रहेंगे। उत्तराधिकार का यह तत्व स्वतंत्रता को नष्ट कर देता है, और प्रज्ञा को भी सीमित कर देता है; क्योंकि इससे एक झूठी सुरक्षा की भावना पैदा होती है, जो ऐसा आत्मविश्वास दिलाती है जिसका कोई आधार ही नहीं होता। सुरक्षा की यह झूठी भावना एक ऐसा मानसिक अंधकार है जिसमें कुछ भी नया पनप नहीं सकता। पूर्णतया भिन्न प्रकार से शिक्षित हुई पीढ़ी--जिसके विषय में हम बात करते आ रहे हैं--एक नये समाज का सृजन करेगी; क्योंकि उसके पास उस प्रज्ञा से उपजी क्षमता होगी--ऐसी प्रज्ञा जो भय से घिरी नहीं है।</p>
<p>Since education is the responsibility of the parents as well as of the teachers, we must learn the art of working together, and this is possible only when each one of us perceives what is true. It is perception of the truth that brings us together, and not opinion, belief or theory. There is a vast difference between the conceptual and the factual. The conceptual may bring us together temporarily, but there will again be separation, if our working together is only a matter of conviction. If the truth is seen by each one of us, there may be disagreement in detail but there will be no urge to separate. It is the foolish who break away over some detail. When the truth is seen by all, the detail can never become an issue over which there is dissension.</p>	<p>चूंकि शिक्षा अभिभावक तथा शिक्षक दोनों की ही जिम्मेदारी है इसलिए हमें साथ-साथ कार्य करने की कला सीखनी ही होगी। यह साथ काम करना तभी हो पाता है जब हममें से हर कोई इस बात को देख पाता है कि सत्य क्या है। अभिमत, विश्वास या सिद्धांत नहीं बल्कि सत्य ही हमको साथ लाता है। तथ्य तथा धारणा में बड़ा फर्क है। धारणा हमें तनिक देर के लिए साथ ला सकती है, किंतु जहां केवल मत या विश्वास के लिए कोई कार्य साथ-साथ किया जा रहा हो वहां अलगाव पुनः आ ही जाएगा। यदि हममें से हर कोई सत्य को देख पा रहा है तो संभव है कि किसी चीज़ की बारीकियों में असहमति हो जाए, किंतु वहां अलगाव की इच्छा कभी नहीं होगी। छोटी-मोटी बातों पर बिखर जाने वाले मूर्ख ही होते हैं। जब हममें से हर एक को सत्य दिखाई दे रहा है तो वे छोटी-मोटी बारीकियां कभी भी ऐसा मुद्दा नहीं बन सकतीं कि गहरे विरोध खड़े हो जाएं।</p>
<p>Most of us are used to working together along the lines of established authority. We come together to work out a concept, or to advance an ideal, and this requires conviction, persuasion, propaganda, and</p>	<p>हममें से अधिकांश लोग स्थापित मान्यताओं के अनुसार ही साथ आते हैं, सहयोग करते हैं। कोई धारणा बनाने या किसी आदर्श का प्रसार करने हेतु हम लोग साथ आते हैं और इसके लिए निष्ठा, बार-बार मनाना-समझाना एवं प्रचार आदि की</p>

<p>so on. Such working together for a concept, for an ideal, is totally different from the co-operation which comes from seeing the truth and the necessity of putting that truth into action. Working under the stimulus of authority - whether it be the authority of an ideal, or the authority of a person who represents that ideal - is not real cooperation. A central authority who knows a great deal, or who has a strong personality and is obsessed with certain ideas, may force or subtly persuade others to work with him for what he calls the ideal; but surely this is not the working together of alert and vital individuals. Whereas, when each one of us understands for himself the truth of any issue, then our common understanding of that truth leads to action, and such action is cooperation. He who cooperates because he sees the truth as the truth, the false as the false, and the truth in the false, will also know when not to co-operate - which is equally important.</p>	<p>आवश्यकता होती है। किसी धारणा या आदर्श के लिए साथ-साथ कार्य करना उस सहयोग से पूर्णतया भिन्न है जो कि सत्य को तथा उस सत्य को कर्म में उतारने की आवश्यकता को देखने से आता है। सत्ता या मान्यता द्वारा प्रेरित होकर कार्य करना सहयोग नहीं है, चाहे वह आदर्श की सत्ता हो या किसी ऐसे व्यक्ति की सत्ता जो उस आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है। एक प्रमुख मान्यताप्राप्त व्यक्ति जिसके पास ढेर सारा ज्ञान है या जिसका शक्तिसंपन्न व्यक्तित्व है, जिसे अपने कुछ विचारों का जुनून है, ज़ोर-ज़बरदस्ती से या प्रच्छन्न रूप से किन्हीं तथाकथित आदर्शों के लिए अपने साथ सहयोग करने के लिए दूसरों को विवश कर सकता है। यह निश्चित तौर पर सतर्क और जीवंत व्यक्तियों का साथ-साथ कार्य करना नहीं कहलाएगा। किंतु जब किसी भी बात की सच्चाई को हममें से प्रत्येक समझ लेता है तब उस सच्चाई की साझा समझ ही कार्य करती है। यही सहयोग है। और जो भी सत्य को सत्य की तरह देखते हुए, झूठ को झूठ की तरह और झूठ की सच्चाई को देखते हुए सहयोग करता है वह आवश्यकता पड़ने पर यह भी जान लेगा कि कब सहयोग नहीं करना है--जो कि उतनी ही अहम बात है।</p>
<p>If each one of us realizes the necessity of a fundamental revolution in education and perceives the truth of what we have been considering, then we shall work together without any form of persuasion. Persuasion exists only when someone takes a stand from which he is unwilling to move. When he is merely convinced of an idea or entrenched in an opinion, he brings about opposition, and then he or the other has to be persuaded, influenced or induced to think differently. Such a situation will never arise when each one of us sees the truth of the matter for himself. But if we do not see the truth and act on the basis of merely verbal conviction or intellectual reasoning, then there is bound to be contention, agreement or disagreement, with all the associated distortion and useless effort.</p>	<p>यदि हममें से प्रत्येक को इस बात की आवश्यकता स्पष्ट प्रतीत होती है कि शिक्षा में एक मौलिक क्रांति ज़रूरी है और यदि हमें यह सत्य दिखाई पड़ जाता है जिसकी हम चर्चा करते आ रहे हैं, तो हम बिना किसी भी तरह के बहलावे-फुसलावे के साथ-साथ कार्य कर पाएंगे। समझाने-बुझाने की नौबत तभी आती है जब कोई व्यक्ति एक दृढ़ रवैया अपना लेता है जिससे वह हटना नहीं चाहता। जब किसी विचार में उसे विश्वास हो जाता है अथवा किसी राय को मज़बूती से पकड़े रखता है, तब वह विरोध को पैदा करता है, और जब ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो दो में से किसी एक को भिन्न ढंग से सोचने के लिए राजी करना पड़ता है, प्रभावित या प्रेरित करना पड़ता है। यदि हममें से प्रत्येक को स्वयं ही सत्य का दर्शन हो जाए तो ऐसी स्थिति आएगी ही नहीं। सत्य को न देखकर जब हम मात्र शाब्दिक दृढ़ विश्वास या बौद्धिक तर्क के आधार पर काम करते हैं तब वहां विवाद होगा, सहमति-असहमति होगी जिसमें विकृत होगी और व्यर्थ की भटकन भी।</p>
<p>It is essential that we work together, and it is as if we were building a house. If</p>	<p>यह निहायत ज़रूरी है कि हम साथ मिलकर कार्य करें मानों हम किसी भवन का निर्माण कर</p>

<p>some of us are building and others are tearing down, the house will obviously never be built. So we must individually be very clear that we really see and understand the necessity of bring about the kind of education that will produce a new generation capable of dealing with the issues of life as a whole, and not as isolated parts unrelated to the whole.</p>	<p>रहे हों। यदि हममें से कोई बना रहा है और दूसरा ढहा रहा है तो भवन नहीं बनेगा। अतः हममें से प्रत्येक के लिए यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि हम इस आवश्यकता को वस्तुतः देख और समझ पा रहे हैं कि उस शिक्षा का जन्म हो जो एक नयी पीढ़ी का निर्माण करे--ऐसी पीढ़ी जो जीवन के प्रश्नों को समग्रतापूर्वक सुलझाने में समर्थ हो न कि उन्हें ऐसे अलग-अलग खंडों में बांटे जिनका समग्र से कोई रिश्ता ही न हो।</p>
<p>To be able to work together in this really co-operative way, we must meet often and be alert not to get submerged in detail. Those of us who are seriously dedicated to the bringing about of the right kind of education have the responsibility not only of carrying out in action all that we have understood, but also of helping others to come to this understanding. Teaching is the noblest profession - if it can be called a profession at all. It is an art that requires, not just intellectual attainments, but infinite patience and love. To be truly educated is to understand our relationship to all things - to money, to property, to people, to nature - in the vast field of our existence.</p>	<p>इस प्रकार सहयोगपूर्ण ढंग से साथ-साथ कार्य करने के लिए हम लोगों को अकसर मिल बैठना होगा, और इस बात के प्रति सावधान रहना होगा कि हम कहीं तफ़सीलों में न खो जाएं। हममें से जो लोग गंभीरता से सही ढंग की शिक्षा को लाने के लिए समर्पित हैं उन पर न केवल यह ज़िम्मेदारी है कि जो कुछ हमने अभी तक समझा है उसे कार्यान्वित करें बल्कि दूसरों की भी इस समझ तक आने में मदद करें। यदि इसे पेशा कहा जा सकता है तो शिक्षण-कार्य सर्वोच्च पेशा है। यह एक कला है जिसके लिए केवल विशेष बौद्धिक क्षमता की आवश्यकता नहीं है बल्कि अनंत धैर्य एवं प्रेम की आवश्यकता है। सच्चे अर्थों में शिक्षित होने का अर्थ है कि हम अपने अस्तित्व के विशाल क्षेत्र में आने वाली सभी चीज़ों, अर्थात् धन, संपत्ति, लोग, प्रकृति आदि के साथ अपने संबंधों को समझें।</p>
<p>Beauty is part of this understanding, but beauty is not merely a matter of proportion, form, taste and behaviour. Beauty is that state in which the mind has abandoned the centre of self in the passion of simplicity. Simplicity has no end; and there can be simplicity only when there is an austerity which is not the outcome of calculated discipline and self-denial. This austerity is self-abandonment, which love alone can bring about. When we have no love we create a civilization in which beauty of form is sought without the inner vitality and austerity of simple self-abandonment. There is no self-abandonment if there is an immolation of oneself in good works, in ideals, in beliefs. These activities appear to be free of the self, but in reality the self is still working under the cover of different labels. Only the innocent mind</p>	<p>सौंदर्य इस समझ का हिस्सा है, क्योंकि सौंदर्य केवल समानुपात, आकार, रुचि तथा व्यवहार ही नहीं है। सौंदर्य तो मन की वह स्थिति है जिसमें सरलता की सघनता के कारण 'स्व' का केंद्र विसर्जित हो गया है। इस सरलता और सादगी का कोई लक्ष्य नहीं है और वह वहीं होती है जहां ऐसा संयम है जो कि सुविचारित अनुशासन और आत्मनिषेध का परिणाम नहीं है। यह संयम आत्मविसर्जन है जिसका जन्म प्रेम से ही हो सकता है। इस प्रेम के अभाव में हम एक ऐसी सभ्यता का सृजन करते हैं जहां केवल रूप और आकार के सौंदर्य की खोज ही रहती है, परंतु आंतरिक जीवंतता तथा सहज आत्मविसर्जन के संयम का सौंदर्य कहीं खो जाता है। जहां आदर्शों, विश्वासों तथा शुभ कार्यों में स्वयं का बलिदान किया जाता है वहां आत्मविसर्जन नहीं होता। इस प्रकार की क्रियाएं दिखने में अहं से मुक्त प्रतीत होती हैं, किंतु वास्तव में वहां भी अहं विभिन्न नामों के आवरण में काम करता रहता है। केवल निश्चल</p>

<p>can inquire into the unknown. But the calculated innocence which may wear a loincloth or the robe of a monk is not that passion of self-abandonment from which come courtesy, gentleness, humility, patience - the expressions of love.</p>	<p>और निर्दोष मन ही अज्ञात का अन्वेषण कर सकता है। किंतु सोची-समझी, ओढ़ी गयी निश्छलता और सादगी, जैसी एक साधु या फकीर के भेस में नज़र आती है, उस आत्मविसर्जन की गरिमा से कोसों दूर है जिसमें शिष्टता, सौम्यता, विनम्रता एवं धीरज रहता है--जो प्रेम की ही अभिव्यक्तियां हैं।</p>
<p>Most of us know beauty only through that which has been created or put together - the beauty of a human form, or of a temple. We say a tree, or a house, or the widely-running river is beautiful. And through comparison we know what ugliness is - at least we think we do. But is beauty comparable? Is beauty that which has been made evident, manifest? We consider beautiful a particular picture, poem, or face, because we already know what beauty is from what we have been taught, or from what we are familiar with and about which we have formed an opinion. But does not beauty cease with comparison. Is beauty merely a familiarity with the known, or is it a state of being in which there may or may not be the created form?</p>	<p>हम सुंदरता को जानते हैं केवल उन चीज़ों के द्वारा जो बनाई गयी हैं, सृजित की गयी हैं, जैसे मानव रूप या किसी मंदिर की सुंदरता। हम कहते हैं कि वह वृक्ष, वह मकान, वह विशाल नदी जो उन्मुक्त बहे जा रही है, सुंदर है। और तुलना करने पर हम कुरूपता को भी जान लेते हैं, कम से कम हमें ऐसा लगता है। लेकिन क्या सुंदरता तुलनात्मक है? क्या सुंदरता वह है जिसे प्रत्यक्ष या साकार बना दिया गया है? हम कहते हैं कि यह चित्र, कविता, चेहरा, सुंदर है, क्योंकि हमें जो सिखाया गया है उसके अनुसार हम पहले से ही उसे जानते हैं, समझते हैं या हम उससे परिचित हैं या उसके विषय में हम एक धारणा बनाए हुए हैं। और क्या तुलना से सुंदरता का अंत नहीं हो जाता? क्या सौंदर्य का अर्थ मात्र ज्ञात से परिचित होना ही है अथवा यह वजूद की वह अवस्था है जो साकार हो भी सकती है और नहीं भी?</p>
<p>We are always pursuing beauty and avoiding the ugly, and this seeking of enrichment through the one and avoidance of the other must inevitably breed insensitivity. Surely, to understand or to feel what beauty is, there must be sensitivity to both the so-called beautiful and the so-called ugly. A feeling is not beautiful or ugly, it is just a feeling. But we look at it through our religious and social conditioning and give it a label; we say it is a good feeling or a bad feeling, and so we distort or destroy it. When feeling is not given a label it remains intense, and it is this passionate intensity that is essential to the understanding of that which is neither ugliness nor manifested beauty.</p>	<p>हम लोग सदा सुंदरता की खोज करते हैं और कुरूपता से बचना चाहते हैं; इस तरह एक से बचकर दूसरे में समृद्धि को ढूंढना अनिवार्यतः जड़ता पैदा करेगा। सुंदरता को समझने और अनुभव करने के लिए तथाकथित सुंदर एवं कुरूप दोनों के प्रति संवेदनशीलता निश्चित रूप से आवश्यक है। कोई भावना सुंदर या कुरूप नहीं होती, वह तो केवल भावना है। जब हम अपने धार्मिक और सामाजिक संस्कारों से इसे देखते हैं, तभी हम कहते हैं कि यह अच्छी भावना है, वह बुरी भावना है और इस प्रकार हम भावना को नष्ट या विकृत कर देते हैं। किंतु वह भावना, जिस पर अच्छे या बुरे का टप्पा नहीं लगा, वह अत्यंत गहन और उत्कट रहती है। यही वह प्रचंड उत्कटता है जो उसे समझने हेतु आवश्यक है जो न तो कुरूपता है और न प्रकट सौंदर्य है।</p>
<p>What has the greatest importance is sustained feeling, that passion which is not the mere lust of self-gratification; for it is this passion that creates beauty and,</p>	<p>जिस चीज़ का सबसे अधिक महत्त्व है वह है स्थायी भाव अर्थात् वह आवेग जो स्व की परितुष्टि की वासना मात्र नहीं है। यही आवेग सुंदरता की सृष्टि करता है और चूंकि वह अतुलनीय है</p>

not being comparable, it has no opposite.	इसलिए उसका कोई विपरीत नहीं होता।
<p>In seeking to bring about a total development of the human being, we must obviously take into full consideration the unconscious mind as well as the conscious. Merely to educate the conscious mind without understanding the unconscious, brings self-contradiction into human lives, with all its frustrations and miseries. The hidden mind is far more vital than the superficial. Most educators are concerned only with giving information or knowledge to the superficial mind, preparing it to acquire a job and adjust itself to society. So the hidden mind is never touched. All that so-called education does, is to superimpose a layer of knowledge and technique, and a certain capacity to adjust to environment.</p>	<p>चूंकि हम मानव का संपूर्ण विकास चाहते हैं, इसलिए हमें केवल चेतन मन का ही नहीं, अपितु अचेतन का भी ध्यान रखना है। बिना अचेतन को समझे केवल चेतन की शिक्षा मानव जीवन में दुख एवं निराशा-भरा अंतर्विरोध पैदा करती है। बाहरी मन की अपेक्षा भीतर का छिपा हुआ मन कहीं अधिक जीवंत, शक्तिशाली होता है। बहुत से शिक्षक उस बाहरी सतही मन को ही शिक्षित करने, सूचना या ज्ञान देने पर ज़ोर देते हैं, ताकि वह कोई आजीविका प्राप्त कर सके और अपने को समाज के अनुकूल बना सके। इस प्रकार भीतर के छिपे हुए मन को कभी स्पर्श ही नहीं किया जाता। इस तथाकथित शिक्षा ने अब तक जो कुछ किया है वह बस इतना ही कि तकनीकी ज्ञान की एक परत उस पर थोप दी है और उसे अपने इर्द-गिर्द के वातावरण के अनुकूल बन जाने की क्षमता दे दी है।</p>
<p>The hidden mind is far more potent than the superficial mind, however well educated and capable of adjustment; and it is not something very mysterious. The hidden or unconscious mind is the repository of racial memories. Religion, superstition, symbol, peculiar traditions of a particular race, the influence of literature both sacred and profane, of aspirations, frustrations, mannerisms, and varieties of food - all these are rooted in the unconscious. The open and secret desires with their motivations, hopes and fears, their sorrows and pleasures, and the beliefs which are sustained through the urge for security translating itself in various ways - these things also are contained in the hidden mind, which not only has this extraordinary capacity to hold the residual past, but also the capacity to influence the future. Intimations of all this are given to the superficial mind through dreams and in various other ways when it is not wholly occupied with everyday events.</p>	<p>ऊपरी, सतही मन चाहे कितना भी शिक्षित और सामंजस्य बनाने में सक्षम क्यों न हो, किंतु छिपा हुआ मन उसकी अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली होता है; और यह कोई बहुत रहस्यपूर्ण बात नहीं है। यह छिपा, अचेतन मन जातीय स्मृतियों का संग्रह है--धर्म, अंधविश्वास और प्रतीकों का, किसी विशेष जाति की विशिष्ट परंपराओं का, उसके समस्त, लौकिक और अलौकिक साहित्य के प्रभाव का, उसकी आकांक्षाओं एवं निराशाओं का, विशिष्ट तौर-तरीकों और भोजन के विविध प्रकारों का--इस सबकी जड़ें अचेतन में हैं। प्रकट तथा गुप्त इच्छाएं, जिनमें निहित हैं खास उद्देश्य और प्रेरणाएं, आशाएं एवं भय, दुख एवं सुख और वे विश्वास जो सुरक्षा की आकांक्षा की अनेकानेक अभिव्यक्तियों के ज़रिए पोषित होते रहते हैं--ये सब भी उसी अचेतन मन का हिस्सा हैं। इस अचेतन मन के पास न केवल अतीत के अवशेषों को संग्रहीत करने की ही असाधारण क्षमता है बल्कि भविष्य को प्रभावित करने की भी क्षमता है। इस सबके संकेत चेतन मन को स्वप्न के माध्यम से तथा अन्य कई तरीकों से मिलते रहते हैं, जब वह दैनिक घटनाओं में पूर्णतया व्यस्त नहीं होता।</p>
The hidden mind is nothing sacred and nothing to be frightened of, nor does it	यह अचेतन मन न कोई पवित्र हस्ती है और न ही कुछ ऐसा जिससे भयभीत हुआ जाए, और

<p>demand a specialist to expose it to the superficial mind. But because of the hidden mind's enormous potency, the superficial mind cannot deal with it as it would wish. The superficial mind is to a great extent impotent in relation to its own hidden part. However much it may try to dominate, shape, control the hidden, because of its immediate social demands and pursuits, the superficial can only scratch the surface of the hidden; and so there is a cleavage or contradiction between the two. We try to bridge this chasm through discipline, through various practices sanctions and so on; but it cannot so be bridged.</p>	<p>न इसे चेतन मन के सामने उघाड़ने के लिए किसी विशेषज्ञ की ज़रूरत है। अचेतन मन के पास बेइंतहा शक्ति होने के कारण ही सतही मन इसके साथ जो चाहे सो नहीं कर सकता। अपने अचेतन हिस्से की तुलना में सतही मन निहायत कमज़ोर होता है। इस पर प्रभाव जमाने का वह चाहे कितना ही प्रयास क्यों न करे, इसे आकार देने का एवं इस पर नियंत्रण करने का कितना ही प्रयास क्यों न करे, परंतु अपनी तात्कालिक सामाजिक मांगों या क्रिया-कलाप के कारण वह अचेतन मन को, गुप्त मन को खरोच भर सकता है, और इस प्रकार दोनों के बीच दरार या परस्पर विरोध बना रहता है। हम लोग इस खाई को अनुशासन से, विभिन्न अभ्यासों से या नियम-नियंत्रण आदि से पाटने का प्रयत्न करते हैं, परंतु इस प्रकार उसे पाटा नहीं जा सकता।</p>
<p>The conscious mind is occupied with the immediate, the limited present, whereas the unconscious is under the weight of centuries, and cannot be stemmed or turned aside by an immediate necessity. The unconscious has the quality of deep time, and the conscious mind, with its recent culture, cannot deal with it according to its passing urgencies. To eradicate self-contradiction, the superficial mind must understand this fact and be quiescent - which does not mean giving scope to the innumerable urges of the hidden. When there is no resistance between the open and the hidden, then the hidden, because it has the patience of time, will not violate the immediate.</p>	<p>चेतन मन मात्र तात्कालिक चीज़ों में, सीमित वर्तमान में व्यस्त है जबकि अचेतन मन युगों के भार के नीचे दबा हुआ है जिसे कोई तात्कालिक आवश्यकता यूँ ही एक तरफ नहीं सरका सकती। यह अचेतन गहन काल का गुण लिये हुए है और तत्कालीन संस्कृति से युक्त बाहरी मन अपनी क्षणिक उत्कट आवश्यकताओं के अनुसार इसका सामना नहीं कर सकता। इसलिए इनके परस्पर विरोध को समूल नष्ट करने के लिए सतही मन को इस तथ्य को समझकर मौन हो जाना होगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि अचेतन मन की असंख्य प्रवृत्तियों को अवसर दिया जाए। जब अचेतन और चेतन में प्रतिरोध नहीं होता, तो अचेतन तत्काल का उल्लंघन नहीं करता, क्योंकि उसके पास असीम धैर्य है।</p>
<p>The hidden, unexplored and un-understood mind, with its superficial part which has been 'educated', comes into contact with the challenges and demands of the immediate present. The superficial may respond to the challenge adequately; but because there is a contradiction between the superficial and the hidden, any experience of the superficial only increases the conflict between itself and the hidden. This brings about still further experience, again widening the chasm</p>	<p>यह छिपा हुआ मन जिसे जांचा-परखा और समझा नहीं गया है, जिसके सतही हिस्से को ही शिक्षित किया गया है, वह तात्कालिक वर्तमान की चुनौतियों और मांगों के संपर्क में आता है। सतही मन चुनौतियों का समुचित उत्तर दे भी सकता है, किंतु चूंकि सतही और अचेतन के बीच परस्पर विरोध है, इस कारण सतही का कोई भी अनुभव उसके और अचेतन के बीच संघर्ष को ही बढ़ाता है। यह आगे और अनुभव लाता है जिससे वर्तमान तथा अतीत के मध्य की खाई और भी चौड़ी हो जाती है। अपने अंदरूनी हिस्से को, अचेतन को</p>

<p>between the present and the past. The superficial mind, experiencing the outer without understanding the inner, the hidden, only produces deeper and wider conflict.</p> <p>Experience does not liberate or enrich the mind, as we generally think it does. As long as experience strengthens the experiencer, there must be conflict. In having experiences, a conditioned mind only strengthens its conditioning, and so perpetuates contradiction and misery. Only for the mind that is capable of understanding the total ways of itself, can experiencing be a liberating factor.</p>	<p>समझे बिना सतही मन वाह्य का अनुभव करता जाता है, जिससे संघर्ष और अधिक गहरा और व्यापक होता जाता है।</p> <p>अनुभव मन को न तो मुक्त करता है और न ही समृद्ध, हालांकि हम लोग सोचते ऐसा ही हैं। जब तक अनुभव, अनुभवकर्ता को बलशाली बनाता रहता है, तब तक संघर्ष तो होना ही है। संस्कारग्रस्त मन अपनी अनुभूतियों से केवल संस्कारग्रस्तता को ही बल प्रदान करता रहता है और इस प्रकार संघर्ष और दुख को ही बढ़ाता है। केवल उसी मन के लिए अनुभूति मुक्ति का साधन हो सकती है जो अपने समस्त ढंग-ढर्रे और तौर-तरीके को समझने में समर्थ है।</p>
<p>Once there is perception and understanding of the power and capacities of the many layers of the hidden, then the details can be looked into wisely and intelligently. What is important is the understanding of the hidden, and not the mere education of the superficial mind to acquire knowledge, however necessary. This understanding of the hidden frees the total mind from conflict, and only then is there intelligence.</p>	<p>जब अचेतन की अनेक परतों की क्षमताओं और शक्तियों का अवलोकन और बोध कर लिया जाता है, तब फिर उनके विस्तार एवं बारीकियों की बुद्धिमानी एवं समझदारी के साथ छानबीन की जा सकती है। जो बात महत्त्वपूर्ण है वह है अचेतन की समझ न कि ज्ञान अर्जित करने के लिए मात्र सतही मन की शिक्षा, भले ही यह कितना ही आवश्यक क्यों न हो। अचेतन की यह समझ समूचे मन को द्रंढ से मुक्त कर देती है और तभी प्रज्ञा का प्रादुर्भाव होता है।</p>
<p>We must awaken the full capacity of the superficial mind that lives in everyday activity, and also understand the hidden. In understanding the hidden there is a total living in which self-contradiction, with its alternating sorrow and happiness, ceases. It is essential to be acquainted with the hidden mind and aware of its workings; but it is equally important not to be occupied with it or give it undue significance. It is only when the mind understands the superficial and the hidden that it can go beyond its own limitations and discover that bliss which is not of time.</p>	<p>हमें न केवल प्रतिदिन की क्रियाओं में व्यस्त रहने वाले सतही मन की पूर्ण क्षमताओं को जगाना होगा बल्कि अचेतन को भी समझना होगा। क्योंकि अचेतन को समझने में ही समग्रतापूर्वक जीना हो सकेगा, जिसमें अंतर्विरोध और इसके साथ आने वाली दुख-सुख की शृंखला का भी अंत हो जाएगा। अचेतन मन से परिचित होना और उसके कार्यों के प्रति सजग होना बहुत आवश्यक है किंतु यह भी उतना ही आवश्यक है कि हम उसी में खो न जाएं और उसे अनुचित महत्त्व न दें। जब मन अपने सतही एवं छिपे दोनों ही हिस्सों को समझ लेता है तभी वह अपनी सीमाओं के पार जा सकता है और उस आनंद को जान सकता है जो समय की उपज नहीं है।</p>